B.A. History Hon's, Part-II

Paper: IV, Unit: IV (d), Date: 12.10.2020 Lecture No.: 15

Lesson: सऊदी अरब के पुनरुत्थान तथा सुधार

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: सऊदी अरब इस्लाम का जन्म-स्थान है। इसी को केन्द्र बनाकर अरब वालों ने विशाल साम्राज्य की स्थापना की। 15वीं शताब्दी के अंत में यह उस्मान-साम्राज्य का अंग बना लिया गया। इस समय मक्का में मुहम्मद के वंशज राज्य करते थे उन्हें 'शरीफ' कहा जाता था। 1517 में उस्मान सुल्तान सलीम प्रथम ने खलीफा का पद ग्रहण किया। खलीफा सुलेमान के समय अरब प्रायद्वीप में उसका शासन और भी सुदृढ़ हुआ। 1633 में काशिम ने तुर्क सूबेदार का बहिष्कार किया और वहाँ अपना स्वतंत्र राज्य कायम किया। काशिम तथा उसके उत्तराधिकारी इमाम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वहाबी आन्दोलन: 18वीं सदी में वहाबी आन्दोलन प्रारंभ हुआ। इसका प्रवर्तक इब्न वहाबी (1703-92) था। इसकी शुरुआत सऊदी अरब के नेज्द प्रान्त में हुई। वहाबी आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य इस्लाम में प्रविष्ट बुराईयों को दूर करना था। इब्न अब्दुल ने इस्लाम को शुद्ध और मौलिक रूप से मानने का आन्दोलन शुरू किया। मुसलमानों में कब्र-पूजा, मजारों की मन्नत, कब्रों की यात्रा, मूर्ति-पूजा आदि बढ़ गई थी। 1773 में उनके अनुयायियों ने रियाद पर अधिकार कर लिया। मक्का और मदीना में मूर्ति-पूजा के सारे चिन्ह मिटा दिए गए। दमिश्क पर भी धावा मारा गया। 1818 में उनके मुख्य केन्द्र अल-दिरीयाह को जला दिया गया। उसका नेता अब्दुल्ला इब्न सऊद पकड़कर कुस्तुनतुनिया लाया गया और उसका सर काट लिया था। उनके परिवार के अन्य लोगों को सुदूर भागों में निष्कासित कर दिया गया।

सऊदी वंश का पुनरुत्थान: 1824 में इब्न सऊद ने रियाद पर अधिकार कर सऊदी वंश तथा वहाबी राज्य को पुनः कायम किया। उसने कुछ आस-पास के प्रदेशों पर भी अधिकार कर लिया। उसके उत्तराधिकारी फैजल इब्न सऊद ने अरब प्रायद्वीप के बड़े भाग को जीता और उस पर शासन करने के लिए सूबेदार को नियुक्त किया। जाबल सम्मार के सूबेदार मुहम्मद इब्न रशीद ने 1892 में नेज्द पर अधिकार कर लिया और सऊदी राजा अब्दुर्रहमान को निष्कासित किया।

अब्दुल अजीज द्वितीय इब्न सऊद (1880-1953): इब्न सऊद का जन्म 1880 में हुआ था। बचपन से ही वे तीव्र बुद्धि के थे और उनका चेहरा आकर्षक था। वे धार्मिक सम्प्रदाय के नेता बनकर अरब को एक शक्तिशाली राज्य के रूप में परिवर्तित करना चाहते थे। उनकी उपलब्धियों का मूल्यांकन निम्नलिखित है:-

विजय कार्य- 22 वर्ष की उम्र में इब्न सऊद ने 1901 में रियाद पर विजय प्राप्त कर ली। नेज्द और अल-हासा एवं अरब के पूर्वी प्रान्तों पर भी विजय की गई। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अरब प्रायद्वीप में दो शक्तियाँ: इब्न सऊद और हेजाज के खलीफा शरीफ हुसैन में पारस्परिक संघर्ष हुआ। नेज्द पर अधिकार करने के लिए सऊद ने 1912 में हेजाज के साथ युद्ध किया था और 1918 में दोनों के बीच युद्ध हुआ। ... सऊद विजय रहे। 24 अगस्त, 1924 को हेजाज पर आक्रमण किया गया और मक्का ... ले लिया गया। शरीफ हुसैन सामना करने में असमर्थ था और हेजाज को राजा घोषित ...

धार्मिक नेता: मक्का और मदीना की विजयों के बाद सऊद ने घोषित किया कि वे इस्लाम की रक्षा करेंगे। 7 जून 1926 में उन्होंने मक्का में मुसलमानों का धार्मिक सम्मेलन बुलाया। उसने सऊद को मुस्लिम राज्यों का नेता मान लिया। इस प्रकार, 1932 तक इस्लाम ... पूर्ण सुरक्षा की घोषणा करके हेजाज, नेज्द तथा इसके पड़ोसी राज्यों को सऊदी अरब में प्रशासनिक रूप से शामिल कर लिया गया।

सुधारक: विभिन्न सुधार कार्यों द्वारा इब्न सऊद ने एक महान सुधारक होने का परिचय दिया। उनके निम्नलिखित सुधार कार्य हैं:-

(a) खानाबदोश जातियों में सुधार: सऊदी अरब के अधिकांश लोग खानाबदोश थे जिनका काम लूटपाट मचाना था। काबिला के सरदार के आपस के लड़ाई-झगड़े थे और खून-खराबी कर डालते थे। ... ... नहीं ...

अतः सऊद ने पहले-पहल इन खानाबदोश जातियों के जीवन में सुधार किया। उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए उन्हें सैनिक शिक्षा दी जाने लगी और सेना में भर्ती किया जाने लगा। संगठित सेना का नाम इख्वान था और इनकी 35 टुकड़ियाँ थी। नेज्द और हेजाज में ऐसी 60 बस्तियाँ कायम की गई।

(b) शासन में सुधार :- प्रशासनिक सुधार के लिए पश्चिमी देशों का अनुकरण किया गया। पश्चिमी ढंग की न्याय-व्यवस्था शुरु की गई। प्रशासनिक सुविधा के लिए सऊद ने अपने राज्य को दो भागों नेज्द और हेजाज में बाँट दिया। अपने बड़े पुत्र अमीर सऊद को नेज्द का और छोटे पुत्र फैजल को हेजाज का सूबेदार नियुक्त किया। अमीर सऊद अरब की सेनापति भी था और फैजल परराष्ट्र-मंत्री भी था। वह अपने अधीनस्थ सचिव शेख यासीन विदेशिक मामलों की देखभाल करता था। योग्य व्यक्ति न मिलने पर सीरिया, लेबनान आदि देशों के लोग भी बहाल किये जाते थे।

(c) आवागमन में सुधार : इब्न सऊद ने आवागमन में भी सुधार किया। नेज्द और हेजाज आदि प्रदेशों में ऊँट की सवारी समाप्त कर मोटर-गाड़ियाँ शुरु की। मोटर-गाड़ियाँ से लाल सागर के पास की खाड़ी जेद्दा से मदीना और बगदाद तक आने-जाने लगी। जेद्दा और मक्का के बीच रेलवे-लाईन भी बिछाई गई। तीर्थयात्रियों को सुविधाएँ देने के लिए दमाम-रियाद रेल मार्ग का निर्माण किया जो 1952 में बनकर तैयार हो गया। हवाईजहाज भी सऊदी अरब से उड़ने लगे। वायरलेस स्टेशन बनाये गए।

(d) आर्थिक सुधार : कृषि, व्यापार-व्यवसाय आदि के विकास पर ध्यान दिया गया। व्यापार की उन्नति के लिए बन्दरगाहों का विकास किया गया। आर्थिक विकास के लिए पहले केन्द्रीय बैंक की स्थापना की गई जो सऊदी-अरब मोनेटरी एजेन्सी के रूप में परिवर्तित हो गया। राजकीय बैंक भी स्थापित किया गया। सऊदी अरब में तेलकूपों का पता लग जाने से मध्यपूर्व में इसकी स्थिति काफी महत्वपूर्ण हो गई। 29 मई, 1933 को कैलीफोर्निया ने सऊदी अरब में स्टैन्डर्ड आयल कम्पनी की स्थापना की गई। एक वर्ष बाद जब टेक्सास कम्पनी इसके साथ मिला दी गई तो इसका नाम बदलकर अरेबियन अमरीकन आयल कम्पनी रखा गया। 1938 में दोनों के बीच समझौता हुआ। सऊदी अरब ने अमरीका को तेल-उत्पादन की दृष्टि से... खनिज सिंडीकेट का निर्माण
1934 में अमरीका ने सऊदी अरेबियन ... सऊदी अरब
किया। 1924 में इब्न सऊद की प्रार्थना पर अमरीका से एक कृषि-मिशन सऊदी अरब पहुँचा। 1943 में अमरीका का एक सैनिक मिशन रियाद आया, जिसने अरबी सेना को प्रशिक्षित किया। 17 जुलाई, 1947 में अमरीका के विदेश मंत्री ने एक विशेषज्ञ को ... दल का प्रस्ताव किया। इस कर सऊदी अरब के विकास के लिए अमरीका सहायता ... समय आवागमन, विद्युत, विद्यालय, औषधालय, पातालतोड़ कुआँ, सिंचाई-प्रबन्ध आदि के लिए राशि व्यय की गई। दमाम और रास तनुरा में नए बन्दरगाह बनाए गए। जेद्दा में एक रेडियो-स्टेशन बनाया गया।

(e) शिक्षा में सुधार : इब्न सऊद ने सामाजिक सुधार पर ध्यान दिया। आधुनिक अरब प्रायद्वीप का समाज काफी पिछड़ा था तथा निरक्षरता के कारण आधुनिक सभ्यता से दूर था। 95% लोग अप्रशिक्षित थे। शिक्षा के लिए प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल खोले गए।

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि इब्न सऊद ने अरब के कायाकल्प करने में बड़ा योगदान दिया। वह तुर्की के मुस्तफा कमाल और ईरान के रजाशाह पहलवी के सुधार कार्यों से बहुत प्रभावित था। शासन, शिक्षा, सेना एवं आर्थिक जगत में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। देखते-ही-देखते यह अरब प्रायद्वीप का एक सम्पन्न राज्य बन गया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर